विचार बिन्दु

कुरूपता मनुष्य की सौंदर्य विद्या है। –चाणक्य

सुखायु और हितायु का वैज्ञानिक प्रमाण-आधार

आयुर्वेद में दीर्घायु का अर्थ सुखकारी व हितकारी आयु है, सिर्फ लम्बा जीना नहीं। दीर्घायु का तात्पर्य उस आरोग्य से है जिसके रहते हम जीवन में वह सब प्राप्त कर पाते हैं, जो प्राप्त करना चाहते हैं। जिस विद्या में सुखकारी आयु और हितकारी आयु तथा दु:खकारी और अहितकारी आयु का विचार हो तथा इन सबके उचित मानदण्डों का अध्ययन हो वह आयुर्वेद कहलाता है। स्वास्थ्य-रक्षण के द्वारा निरोगी बने रहना उपयोगी है, क्योंकि आरोग्य के बिना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कुछ नहीं मिल सकता। यदि व्यक्ति स्वस्थ नहीं है या बीमारियों को रोक नहीं पाये, तो ना तो वह अपनी मूल प्रकृति के अनुसार कुछ धारण कर सकता है, ना ही धन कमा सकता है, ना ही खाने-पीने, सोने या जीवन का कोई आनन्द ले सकता है, और ना ही शान्तिपूर्वक संसार से विदा हो सकता है। अत: भौतिकतावादी युग में भी स्वास्थ्य से बढकर कुछ भी नहीं है।

आयुर्वेद के 8 अंगों में काय-चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, शालाक्य, भूतविद्या (मनोचिकित्सा), कौमारभृत्य, अगद्तंत्र, रसायन तथा वाजीकरण हैं। आयुर्वेद के दो मूल उद्देश्यों में प्रथम स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा है और दूसरा आतुर या बीमार के विकारों का प्रशमन या बीमारियों की चिकित्सा है। यहाँ स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा के संदर्भ में कुछ मूल सिद्धान्त, दर्शन या विवेचन हैं। इस चर्चा का महत्व यह है कि संहिताओं, वैज्ञानिक अध्ययनों, और अनुभवजन्य ज्ञान से प्राप्त प्रमाण हमें इस बात से आश्वस्त करने के लिये उपयोगी रहेंगे कि वर्तमान जनजीवन को स्वस्थ रखने के लिये संहिताओं, साइंस, तथा अनुभवजन्य-ज्ञान में प्रमाण-आधार सुदृढ़ है।

जहाँ तक सिद्धान्तों की समग्रता का प्रश्न है, आयुर्वेद में स्वास्थ्य-रक्षण एवं चिकित्सा से जुड़े मूल सिद्धांतों और निर्देशों की संख्या बहुत अधिक है। तथापि, कुछ सिद्धांत और निर्देश जो स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा के संदर्भ में प्रत्यक्ष रूप से लागू होते हैं, उनमे से कुछ प्रमुख हैं: 1. सामान्य-विशेष, 2. गुण-कर्म, 3, त्रिदंड, 4. त्रिविध-हेतु, 5. त्रिदोष, 6. षड्रस, 7. पंचकर्म, 8. आहार मात्रा, 9. हिताहितसंसर्जनक्रम, 10. आदान-विसर्ग, 11. स्वस्थवृत्त, 12-धारणीय-अधारणीय वेग, 13. सद्वृत्त, 14. अन्नपान-विधि, 15. धातु-पोषण, 16. आहार विधिविशेषायतन, 17. आहार विधिविधान, 18. त्रिविध कुक्षीय, 19. रसायन, 20. जनपदोद्वंश आदि प्रमुख हैं। वस्तुत: इनमें से प्रत्येक के अंतर्गत, विचार-विमर्श में दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या सहित, अनेक विस्तृत विषय समाहित हैं जिन पर विस्तृत चर्चा आगे यथासमय होगी।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि आयुर्वेद की संहिताओं में उपरोक्त समस्त सिद्धान्तों का वर्णन तथा प्रयोग में लाये जाने की विधियाँ और उनकी उपयोगिता का विवेचन उपलब्ध है, परंतु आज समकालीन वैज्ञानिक युग में यह मानने का प्रमाण क्या है कि उक्त सलाह विज्ञान-सम्मत ही है। इस प्रश्न का उत्तर कई स्त्रोतों से दिया जा सकता है, जिनमें देश-विदेश के आयुर्वेदाचार्यों द्वारा की गई शोध से प्राप्त प्रमाण, आयुर्वेद का संदर्भ दिये बिना भी समान विषयों में विश्वभर में हुई शोध के निष्कर्षों का प्रमाण, और आयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान शामिल है।

प्राचीन ग्रन्थों के विपुल भण्डार की उपलब्धता के बावजूद आज हमें आधुनिक विज्ञान की ओर देखने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है। दरअसल, वर्ष 2010 के अनुमान बताते हैं कि लगभग 15 लाख शोध-पत्र प्रति वर्ष विश्व की महत्वपूर्ण शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रहे थे। सभी प्रकार के जर्नल्स को लें तो मैक्स प्लैंक सोसायटी और स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, ज्यूरिच में कार्यरत वैज्ञानिक लुत्ज़बॉर्नमान के अनुमान बताते हैं कि ज्ञान में वृद्धि की दर इतनी है कि अब विश्व का साइंटिफिक आउटपुट हर 9 साल में दोगुना हो रहा है। वर्ष 1600 के मध्य से वर्ष 2012 तक ज्ञान के उत्पादन को तीन चरणों में देखा जा सकता है। प्रत्येक चरण में पिछले चरण की तुलना में ज्ञान उत्पादन में तीन गुना वृद्धि पायी गयी है। प्रथम चरण, 16वीं शताब्दी के मध्य से 18वीं शताब्दी के मध्य तक, ज्ञान उत्पादन में वृद्धि की दर लगभग एक प्रतिशत थी। उसके बाद दो विश्वयुद्धों के मध्यवर्ती काल में 2 से 3 प्रतिशत, तथा अंतिम विश्वयुद्ध के बाद से लेकर वर्ष 2012 तक यह वृद्धि दर 8 से 9 प्रतिशत रही।

आज विश्व के अनेक डाटाबेस जैसे स्कोपस, वेब ऑफ नॉलेज और गूगल स्कॉलर आदि में सभी विषयों के कुल 4 से 5 करोड़ शोध पत्रों का भण्डार है।आयुर्वेद में भी नये ज्ञान का उत्पादन हो रहा है। वर्ष 1923 से 2022 के दौरान प्रकाशित कुल 46,616 शोधपत्रों में कहीं न कहीं आयुर्वेद का उल्लेख हुआ है। इनमें से 12,906 शोधपत्र विशेषकर आयुर्वेद पर केन्द्रित हैं। पिछले दो दशकों के दौरान भारत के कई दिग्गज वैज्ञानिकों और आयुर्वेदाचार्यों की शोध ने आयुर्वेद का प्रमाण-आधार बहुत मजबूत किया है। आयुर्वेदिक बायोलॉजी, आयुर्वेदिक जीनोमिक्स, समठा-पद्धित या होल-सिस्टम क्लिनिकल ट्रायल्स आदि में उपयोगी कार्य हुआ है।

यहाँ कुछ उदाहरण उपयोगी होंगे। स्कोपस डेटाबेस, जो शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित उच्च कोटि के शोधपत्रों का विश्व में सबसे बड़े डेटाबेस में से एक है, में अकेले शहद पर ही 250 से अधिक क्लीनिकल ट्रॉयल्स सहित विभिन्न पहलुओं पर 38,000 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। शहद पर आयुर्वेद का कथन कथनमधु श्लेष्मपित्तप्रशमनानाम् (च.सू. 25.40) को देखने पर ज्ञात होता है कि मूलत: आयुर्वेद के इस द्रव्य पर आयुर्वेद के सन्दर्भ सहित 122 शोधपत्र हैं, जबकि विश्व भर में शहद पर 38,000 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें से 2900 से अधिक शोधपत्र शहद के औषधीय गुणों पर, व 8,000 से अधिक भोजन के रूप में शहद की उपयोगिता सिद्ध करते हैं।

एक अन्य अध्ययन अनुसार, उम्रदराज लोगों में पांच वर्ष तक चले क्लिनिकल ट्रायल में व्यायाम की 'तीव्रता' व 'मृत्यु-दर' के बीच सम्बन्ध नहीं मिला। इसलिये 'तीव्रता' के चक्कर में पड़ने के बजाय अपने बल के आधे तक व्यायाम करते रहिये। समय की बात करें तो 30 मिनट प्रतिदिन से कम व्यायाम नहीं रहना चाहिये। सप्ताह में व्यायाम करते समय अगर 120 मिनट गार्डेन, पार्क या हरियाली वाली जगह में बिताया जाये तो व्यायाम का मानसिक स्वास्थ्य पर धनात्मक प्रभाव और भी बेहतर रहता है।

इसी प्रकारआमलकंवय:स्थापनानाम् (च.सू. 25.40) चरकसंहिता का एक महावाक्य है। अनेक शताब्दियों बाद आचार्य वाग्भट ने इसी वाक्य को वयस:स्थापने धात्री (अ.हृ.उ. 40.56) दोहराया है। विश्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण शोध-पत्रिकाओं में आमलकी पर 2,000 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इन शोध पत्रों में इन-वाइट्रो और इन-वाइवो अध्ययनों के अलावा कुछ क्लीनिकल ट्रायल्स भी हैं जो निर्विवाद रूप से आँवला में रसायन गुणों को प्रमाणित करते हैं।

इसी प्रकार रक्तशालि या लाल चावल पर 4,849 शोधपत्र विश्व की प्रमुख शोध पत्रिकाओं में 2022 तक प्रकाशित हो चुके हैं। वैज्ञानिकों ने लाल चावल को कैंसररोधी, डायबिटीज-रोधी, एंटीऑक्सीडेंट, एंटीजीनोटॉक्सिक, हिपेटोप्रोटेक्टिव, कार्डियोप्रोटेक्टिव, एंटीइन्फ्लेमेटोरी, एंटीडायबिटीज, एवं इम्यूनोमोड्युलेटरी पाया है।

वर्ष 2016 में विश्व-प्रसिद्ध शोध पत्रिका लैंसेट में 10 लाख से अधिक लोगों के संदर्भ में एकत्र आंकड़ों के आधार पर प्रकाशित एक मेटाएनलिसिस से ज्ञात होता है कि प्राय: कुर्सी में बैठे-बैठे काम करने वाले लोग यदि रोजाना 60 से 75 मिनट व्यायाम करें तो उनके असमय मरने का जोखिम कम हो जाता है। बात यदि मोटापा प्रबंध के सन्दर्भ में की जाये, तो समुचित खानपान के साथ ही सप्ताह में कम से कम 150 मिनट का व्यायाम लाभकारी है। मेटा-एनालिसिस के परिणाम स्पष्ट करते हैं कि व्यायाम से प्रसन्नता मिलती है। एक अन्य मेटा-एनालिसिस के परिणाम बताते हैं कि हरियाली और जलाशयों के पास व्यायाम मन को प्रसन्न रखता है। वस्तुत: व्यायाम त्रिदोषशामक है और इसके कारण विश्व में सालाना 3.9 मिलियन मौतें टल जाती हैं। एक अन्य मेटा-एनालिसिस से ज्ञात होता है कि प्राकृतिक वन और उपवन में व्यायाम न केवल मानसिक बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रदान करता है। एक मेटा-एनलिसिस बिलकुल साफ़ कर देती है कि व्यायाम करना आवश्यक है भले ही तीव्रता कम या ज्यादा कुछ भी हो। रोचक बात यह है कि आयुर्वेद व्यायाम की तीव्रता की बात नहीं करता बल्कि व्यायाम की अनिवार्यता की बात करता है और बल के आधे तक प्रतिदिन व्यायाम करने की सलाह देता है। आयुर्वेद चलने (चंक्रमण) की भी सलाह देता है किन्तु चंक्रमण ऐसा हो जो अति-पीड़ादायक नहीं होना चाहिये। व्यायाम और चंक्रमण ना तो बलार्ध से अधिक हो और ना ही पीड़ादायक हो, अन्यथा हानिकारक होता है। आयुर्वेद और समकालीन विज्ञान यहाँ एक जैसी सलाह के समीप आते दृष्टिगोचर होते हैं। एक अन्य अध्ययन के अनुसार, उम्रदराज लोगों में पांच वर्ष तक चले क्लिनिकल ट्रायल में व्यायाम की 'तीव्रता' व 'मृत्यु-दर' के बीच सम्बन्ध नहीं मिला। इसलिये 'तीव्रता' के चक्कर में पड़ने के बजाय अपने बल के आधे तक व्यायाम करते रहिये। समय की बात करें तो 30 मिनट प्रतिदिन से कम व्यायाम नहीं रहना चाहिये। सप्ताह में व्यायाम करते समय अगर 120 मिनट गार्डेन, पार्क या हरियाली वाली जगह में बिताया जाये तो व्यायाम का मानसिक स्वास्थ्य पर धनात्मक प्रभाव और भी बेहतर रहता है।

तीन सूत्र जो दवाई की आवश्यकता कम कर देते हैं, उनमें कालभोजन, व्यायाम और सत्वावजय प्रमुख हैं। कैलोरी व कदम गिनने की सनक आयुर्वेद का विषय नहीं। काल-भोजन और बलार्ध-व्यायाम कीजिये: ऊर्जस्प्रक्रमगणनातिनिष्ठानास्तिआयुर्वेदविषय:। समाचरेत्कालभोजनंबलस्यार्धव्यायामश्च। मोटापा की समस्या देखें तो यह गोलियां खाने से नहीं छंटता। आचार्य चरक कहते हैं कि मोटापा छांटने के लिये भोजन की मात्रा घटाने से उत्तम और कुछ नहीं है। आचार्य सुश्रुत कहते हैं इस काम के लिए व्यायाम से बेहतर कुछ नहीं है। दोनों मिलाकर तो मोटापा कम कर ही सकते हैं। बात साधारण है: हितकारी भोजन मात्रापूर्वक नियतकाल में दिन में केवल दो बार लीजिए और नित्य व्यायाम कीजिए। बस इस ज्ञान को काम से जोड़ने का पचड़ा है!

यही स्थिति सद्वृत्त में समाहित विविध विषयों की है। शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित लगभग 2 लाख शोध पत्र ऐसे हैं जहाँ मंगलकार्य, त्याग, उपहार, हवन, नियम, प्रायश्चित, उपवास, सस्वर पाठ, आध्यात्मिक लगाव, तीर्थाटन, क्षमा, दान आदि विषयों तथा इनका स्वास्थ्य रक्षण एवं रोगमुक्ति के संदर्भ में विश्लेषण है। योग के यम और नियम में भी सद्वृत्त के ही विविध विषय समाहित हैं। इन पर 25,000 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या के रूप में समाहित विविध विषयों में पृथक पृथक शोध भी है। इनमें सबसे अधिक वैज्ञानिक शोध भोजन, भोजन द्रव्य, नस्य, पंचकर्म, मुख-स्वास्थ्य, कवल-गंडूष, अभ्यंग, मौसमी बीमारियों से बचाव, व्यायाम, पर्सनल-हाइजीन आदि पर उपलब्ध है। सारांश यह है कि भले ही शोध आयुर्वेद का नाम लेकर न की गई हो, लेकिन आहार स्वस्थवृत्त, सद्वृत्त, रसायन एवं पंचकर्म आदि में समाहित प्रयोगों एवं परिणामों को आधुनिक शोध के प्रकाश में देखने पर इस बात के निर्विवाद प्रमाण मिलते हैं कि आयुर्वेद के माध्यम से स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा संभव है।

इस सब चर्चा का हमारे लिये महत्व क्या है? मुख्य रूप से संहिताओं, साइंस एवं आयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान निर्विवाद रूप से सिद्ध करता है कि यदि कोई व्यक्ति आज कैंसर, डायबिटीज, हृदय रोग, मनोरोग या श्वसन तंत्र जैसी गैर-संचारी बीमारियों से पीड़ित नहीं है तो वह इन बीमारियों से आगे भी अपने आपको बचाये रख सकता है, बशर्ते आयुर्वेद की सलाह मानकर अपने जीवन में इस ज्ञान का उपयोग करे। हाँ, आयुर्वेद में स्वास्थ्य-रक्षण के सिद्धान्त और उन सिद्धान्तों का क्रियान्वयन योग्य आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से ही किया जाना चाहिये ताकि समुचित परिणाम प्राप्त हो सकें। आयुर्वेद में लगभग 300 प्रकार की सलाह केवल सद्वृत्त में ही उपलब्ध हैं, और समकालीन वैज्ञानिक शोध में उन्ही विषयों पर 7 लाख से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। शोध में उपलब्ध प्रमाणों के इस संक्षिप्त वर्णन, जो आयुर्वेद की समकालीन वैज्ञानिकता को दर्शित करता है, के बाद आगे यथासमय यहाँ प्रत्येक विषय पर पृथक-पृथक चर्चा तथा उपयोग-योग्य ज्ञान प्रस्तुत किया जाता रहेगा होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

बजट मध्यम वर्ग को समर्पित

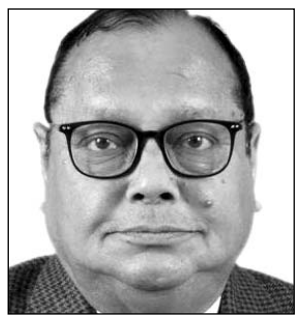

सीए शंकर अग्रवाल

आर्थिक विशेषज्ञ सीए शंकर अग्रवाल ने बजट को मध्यम वर्ग के लिए समर्पित बजट बताया। मध्यम वर्ग काफी लम्बे समय से आयकर छूट की उम्मीद कर रहा था। अब आयकर में 12 लाख तक की आय पर कोई कर नहीं देना होगा। पहले 7 लाख तक की आय पर कोई कर नहीं देना होता था, एवं मध्यम वर्ग को 80,000 रू. तक की सालाना आयकर छूट मिलेगी, 15 लाख तक की आय वालों को 70,000 और 25 लाख तक की आय वालों को 1,10,000 की छूट मिलेगी। इस कदम का दूरगामी परिणाम हमें आने वाले समय में देखने को मिलेगा। मध्यम वर्ग के लोगों के हाथ में ज्यादा पैसा आने से बाजार में पैसा ज्यादा आयेगा व आम आदमी ज्यादा खर्च करेगा, इससे उपयोग व उत्पादन दोनों बढ़ेगें, जिससे जीडीपी बढ़ेगी एवं उद्योगों को उत्पादन बढ़ाने से उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। आयकर में अनेक कटौतियों को मिला ले तो इससे साफ जाहिर है कि इससे बाजार में आर्थिक सुधार होगा।

वित्त मंत्री ने वरिष्ठ नागरिकों को ब्याज पर कर कटौती की सीमा 50,000 से बढ़ाकर 1,00,000 कर बडी राहत दी है। किराये पर 2.40 लाख पर कर कटौती की सीमा बढ़ाकर 6.00 लाख कर दी है। उपरोक्त समस्त कदम एक मध्यम एवं आम आदमी को राहत देने वाला बजट है।

उद्योगों एवं डैडम् को बढ़ावा देने के लिए ऋण गारण्टी की डैडम् में 5 करोड़ की सीमा बढ़ाकर 10 करोड़ कर दी है, साथ ही स्टार्टअप के लिए ऋण गारन्टी सीमा 10 करोड़ से 20 करोड़ कर बड़ी राहत दी है। डैडम् के लिए 10 लाख क्रेडिट कार्ड दिये जाने के निर्णय किसानों की तरह व्यापारी को भी लाभ होगा, इससे 5 लाख का सीधा लेन-देन हो सकेगा।

बिहार राज्य के लिये मखाना बोर्ड के साथ-साथ अनेक विकास योजनाओं की घोषणा की है। इससे पिछड़ा राज्य की मांग तो पूर्ण नहीं होगी पर काफी लाभ बिहार को मिलेगा।

बजट में कृषि, युवा, महिलाओं के लिए अनेक घोषणा की है जिसमें प्रधानमंत्री धनधान्य कृषि योजना महिलाओं को आर्थिक मजबूती देने हेतु अनेक उपायों की घोषणा ग्रामीण महिलाओं, युवाओं को अतिरिक्त सहायता, कपास किसानों को 5 वर्ष का पैकेज आदि घोषणा आम आदमी को बढ़ावा देने का बजट है।

उपरोक्त बजट के अलावा इस अवसर पर भारत की वास्तविक प्रगति का सूचक बजट की भावना हो सकती है पर बजट के प्रावधान नहीं हो सकते। हमारा देश आज प्रगति के पथ पर है। यह दुनिया के बड़े-बडे देश भी मानते हैं। हमारा अपना आंतरिक आंकलन महत्वपूर्ण होता है। इस और हम पिछले दस वर्षों की एनडीए सरकार की यात्रा को देखते है तो पाते हैं कि जहां देश में दशको तक 5 आईआईटी थे, वह संख्या बढ़कर 23 हो गई है।

सरकार ने पिछले दस वर्ष में 110 करोड़ परिवारों को उज्ज्वला योजना के अन्तर्गत गैस कनेक्शन दिये हैं। इस कारण 1.50 लाख लोगों की जान बच रही है। यह एक अप्रत्यक्ष आंकलन है जो हमारे विपक्ष के अलावा सामान्य जन को भी दिखाई नहीं देता। आज हमारा देश रक्षा एवं मोबाईल उत्पादन में अग्रणी हो रहा है जहां रक्षा उत्पादन के लिए हम विदेश कम्पनियों पर निर्भर रहते थे, वहीं आज हम निर्यात का एक नया कीर्तिमान बना रहे हैं। मोबाईल उत्पादन का भारत आज हब बन गया है। अनेक विदेशी कम्पनियां यहां उत्पादन इकाई डालकर मोबाईल बना रही है। परिणाम स्वरूप मोबाईल उत्पादन में भारत सिरमोर हो रहा है।

हमारा आयकर एवं जीएसटी संग्रह लगातार बढ़ रहा है। आयकर संग्रहण 6,95,792 करोड़ से बढ़कर 20 लाख करोड़ पर पहुंच गया है। वहीं जीएसटी 82,294 करोड़ के मुकाबले 2 लाख करोड़ मासिक आ गया है। यह सरकार के प्रभावी नितियों एवं नियंत्रण का प्रभाव साफ दर्शाता है। यह यात्रा यहां रूकी नहीं है। पिछले 60 वर्षों में जितनी सड़के बनी थी, उससे आधी बीते दस वर्ष में बनी है। रेलमार्ग का विद्युतीकरण 21000 किलोमीटर से बढ़कर 63000 किलोमीटर पर आ गया है। इलेक्ट्रोनिक उत्पादन जहां 7 अरब डॉलर था, वह अब 23 अरब डॉलर को पार कर गया है।

केन्द्र सरकार ने देश के बुनियादी ढ़ांचे को मजबूत करने की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता जारी रखी है। पिछले चार बजट में इस पर निरन्तर खर्च में बढ़ोतरी की है। पहले वर्ष में 5.00 लाख करोड़, दूसरे में 7.50 लाख करोड़, तीसरे में 11,11,111 करोड़ पूंजीगत व्यय का प्रावधान कर इसे निरन्तर आगे बढ़ाया है। परिणाम हमारे सामने है। आज देश में 2014-15 तक 74 हवाई अड्डे थे, आज 148 हवाई अड्डे कार्यरत हैं। आज सीमा पर सड़क एवं टनल का जो कार्य हुआ है उससे चीन सहित हमारे अनेक पडौसी देश परेशान है।

विकास के अनेक अन्य क्षेत्र हैं जिन पर विस्तार से चर्चा हो सकती है लेकिन उपरोक्त विकास यात्रा से यह स्पष्ट दिखता है कि हमारे देश का विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था से तीसरे नम्बर पर आने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

–सी.ए. शंकर अग्रवाल

ऋतुओं के राजा बसंत का पर्व बसंत पंचमी

डॉ. जे. के. गर्ग

धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक बसंत पंचमी को ही विद्या एवं बुद्धि की देवी माता सरस्वती का जन्म हुआ था। पौराणिक कथाओं के अनुसार ऋतुराज बसंत के साथ धरती पर कामदेव और उनकी पत्नी देवी रति आते हैं और सभी में प्रेम और काम भावना जागृत करते हैं। ऐसा माना जाता है कि बसंत पंचमी के दिन कामदेव और देवी रति की पूजा करने से पति-पत्नी के प्यार में वृद्धि होती है और दोनों का रिश्ता मजबूत होता है। मान्यताओं के अनुसार कामदेव प्राणियों के अंदर प्रेम भावना जागृत करते हैं वहीं देवी रति श्रृंगार करने की इच्छा को बढ़ाती हैं। हिंदू धर्म शास्त्रों के मुताबिक, कामदेव के धनुष से निकला बाण सीधा दिल पर लगता है। इस बाण के लगने से दिल प्रेम की भावना से भर जाता है। इसीलिये बसंत पंचमी के दिन मां सरस्वती के साथ-साथ भगवान श्रीहरि विष्णु, कामदेव और रति का पूजन भी होता है। बसंत पंचमी के दिन माँ सरस्वती की पूजा अर्चना करके उनसे जीवन में विद्या, बुद्धि, कला एवं ज्ञान प्राप्त का वरदान मांगा जाता है।

धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक सृष्टि के रचियता ब्रह्मा जी ने जीवो और मनुष्यों की रचना भी इसी दिन को की थी। ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करके जब उसे देखने लगे तो उन्हें प्रथ्वी पर चारों तरफ सुनसान निर्जन वातावरण दिखाई दिया जिससे प्रजापति खिन्न और उदास हो गये। ब्रह्माजी ने भगवान विष्णु जी की आज्ञा अनुसार अपने कमंडल से पृथ्वी पर जल छिडका, धरती पर गिरने वाले जल से वहां हर जगह पर कंपन होने लगता है और एक अद्भुत शक्ति के रूप में चतुर्भुजी स्त्री प्रकट हुयी उस देवी के एक हाथ में वीणा और दुसरे हाथ में वर मुद्रा थी बाकी अन्य हाथो में पुस्तक और माला थी। ब्रह्माजी उस स्त्री से वीणा बजाने का अनुरोध किया देवी के वीणा बजाने के साथ ही संसार के सभी जीव-जंतुओ को वाणी प्राप्त को गयी। उसी क्षण ब्रम्हाजी ने उस स्त्री को सरस्वती कहा और सरस्वती को मधुर वाणी के साथ-साथ विद्या और बुद्धि भी प्रदान की। भगवान राम भी वसंत पंचमी के दिन शबरी के आश्रम पर आये एवं शबरी के झूटे बैर भी राम ने प्रेम पूर्वक खाये थे।

किंवदंतीयो के मुताबिक सूफी संत चिश्ती निजामुद्दीन औलिया अपने जवान भतीजे की मृत्यु से अत्यंत दुखी हो गये थे। मशहूर शायर अमीर खुसरो ने वसंत पंचमी के दिन कुछ औरतों को पीले कपडे पहन कर पीले फूल ले जाते देखा तो खुद भी पीले कपडे पहन कर पीले फूल लेकर चिश्ती साहब के पास पहुँचे। उन्हें देख कर चिश्ती साहब के चेहरे पर हँसी आ गयी। तभा से दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया की दरगाह और चिश्ती समूह की अन्य सभी दरगाहों पर वसंत उत्सव को मनाया जाने लगा। वैज्ञानिक और ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बसंत ऋतु शरद ऋतु के ठंड से शीतल हुई पृथ्वी की अग्नि ज्वाला, मनुष्य के अंत:करण की अग्नि एवं सूर्य देव के अग्नि के संतुलन का यह काल होता है। बसंत ऋतु ही वो समय है जहां प्रकृति पुरे दो महीने तक वातावरण को प्राकृतिक रूप से वातानुकूलित बनाकर संपूर्ण प्राणियों को स्वस्थ जीने का मार्ग प्रदान करती है। साहित्यकारों के लिए वसंत प्रकृति के सौन्दर्य और प्रणय के भावों की अभिव्यक्ति का अवसर है तो वीरों के लिए शौर्य के उत्कर्ष की प्रेरणा हैमां शारदा का प्राचीनतम मंदिर पकिस्तान अधिकृत कश्मीर में मुज़्ज़फ़राबाद के निकट पवित्र कृष्ण-गंगा नदी के तट पर स्थित है।

पौराणिक मान्यता है कि स्वयं ब्रह्मा जी ने इस मंदिर का निर्माण कर मां शारदा को वहांस्थापित किया था इसीलिए उस मंदिर को ही मां शारदा का प्राकट्यय स्थल माना जाता है।आदि गुरु शंकराचार्य ने इसी शारदा पीठ में मां शारदा के दर्शन किए थे। पंजाब और हरियाणा में बसंत पंचमी के दिन है.लोग सुबह जल्दी उठकर स्नान करके भगवान से आशीर्वाद लेने के लिये गुरुद्वारे या मंदिर जाते हैं। बड़े और बच्चेसभी पतंग उड़ाते हैं। लोक गीत गाते और नाच-गाना करके आनन्द मनाते हैं। उत्तर प्रदेश और राजस्थान में देवी सरस्वती की पूजा की जाती तथा पतंगबाजी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता हैं। राजस्थान में लोग चमेली की माला पहनते हैं। उत्तर प्रदेश में कई भक्त बसंत पंचमी पर भगवान कृष्ण की पूजा करते हुए केसर चावल चढ़ाते हैं। इस दिन पीले गेंदे से घर और प्रवेश द्वार सजाए जाते हैं। पश्चिम बंगाल के कई शहरों और बिहार में देवी सरस्वती की मनमोहक आकर्षक मूर्ति बनाकर विशाल पंडाल बना कर देवी मां की पूजा करने के लिए इकट्ठा होते हैं, देवी मां को मीठे पीले चावल और बूंदी के लड्डू चढ़ाते हैं। उत्तराखंड के लोग फूल, पत्ते और पलाश की लकड़ी चढ़ाकर देवी सरस्वती की पूजा करते हैं पीले वस्त्र धारण करते हैं, माथे पर पीले रंग का तिलक लगाते हैं और पीले रुमाल का इस्तेमाल करते हैं। पतंग उड़ाते हैं और केसर हलवा खाते हैं। गोकुल और वृंदावन में भी बसंत उत्सव धूमधाम और नाच गाने के साथ मनाया जाता है। ब्रज भूमि में बसंत पंचमी को रास नृत्य हर्षोल्लास के साथ किया जाता है।

मान्यताओं के मुताबिक भगवान कृष्ण ने बसंत पंचमी को ही रास किया था। सनातनधर्मी लोगों के लिये बसंत पंचमी महत्वपूर्ण पर्व है। अन्नदाता किसानों के लिये भी यह एक प्रमुख पर्व है। सनातनधर्मी इस पर्व को संगीत, ज्ञान, कला, विद्या, वाणी और ज्ञान की देवी सरस्वती के समर्पण के दिन के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। बसंत पंचमी के दिनों में सरसों के खेत लहलहा उठते हैं इसीलिए लोग इस दिन पीले रंग के कपड़े पहनते हैं। सम्पूर्ण भारत में माघ शुक्ल पंचमी को वसंत पंचमी उत्सव मनाया जाता है। बसंत पंचमी के दिन से ही वसंत ऋतु प्रारंभ होती है। इसे श्रीपंचमी, ऋषि पंचमी, मदनोत्सव, वागीश्वरी जयंती और सरस्वती पूजा का उत्सव भी कहा जाता है। वसंत पंचमी के दिन ही होलिका दहन स्थान का पूजन किया जाता है और होली में जलाने के लिए लकड़ी और गोबर के कंडे आदि एकत्र करना शुरू कर देते हैं। इस दिन से होली तक 40 दिन फागगायन यानी होली के गीत गाए जाते हैं। प्रकृति की अनुकम्पा से हमारे भारत में ही नियमित रूप से छ: ऋतुएँ होती है।

योगीराज कृष्ण ने कहा था– मैं ऋतुओं मे वसंत ऋतु हूँ, मुझे वसंत ऋतु सबसे अधिक प्रिय है। इसीलिए इन छ: ऋतुओं में वसंत ऋतु को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। इसे ऋतुराज या मधुमास भी कहते हैं। वसंत पंचमी प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य, श्रृंगार और संगीत की मनमोहक ऋतु यानी ऋतुराज के आगमन की सन्देश वाहक है। वसंत पंचमी के दिन से शरद ऋतु की विदाई के साथ पेड़-पौधों और प्राणियों में नवजीवन का संचार होने लगता है। प्रकृति भी नवयौवना की भांति श्रृंगार करके इठलाने लगती है। पेड़ों पर नई कोपलें, रंग-बिरंगे फूलों से भरी बागों की क्यारियों से निकलती भीनी सुगंध, पक्षियों के कलरव और पुष्पों पर भंवरों की गुंजार से वातावरण में मादकता छाने लगती है। कोयल कूक-कूक के बावरी होने लगती हैं। बसंत का वर्णन मेरी स्वजन कविता अग्रवाल ने इस प्रकार किया है :- उर्वी ने किया अनुपम श्रृंगार फैली हरीतिमा दिग दिगंत। पुष्पों से सजे तोरण द्वार कोयलिया गाए राग मल्हार। शिशिर का अब हुआ अंत देखो आए ऋतुराज बसंत। ओढ़ चुनरिया पीली पीली महक रही वो भीनी-भीनी। खुशियाँ छाई चहुँ ओर अनंत देखो आए ऋतुराज बसंत। बसंत के अंदर श्रृंगार अपने यौवन पर पहुंच जाता है। इस वर्ष बसंत पंचमी का पर्व भारत में और संसार में जहां-जहां सनातन धर्मी रहते हैं वहां 3 फरवरी 2025 को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

बीकानेर समेत राज्य में जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) के 250 से अधिक पद रिक्त

स्वीकृत 558 डीईओ के पदों में से 45 प्रतिशत से अधिक पद रिक्त हैं

बीकानेर, (निसं)। सरकार नकल और परीक्षाओं में फर्जीवाड़ा रोकने के लिए कटिबद्ध दिखने का प्रयास कर रही है। दूसरी ओर जब 35 दिन बाद 6 मार्च से 10वीं और 12वीं बोर्ड की परीक्षाएं शुरू होने वाली हैं और शासन-प्रशासन और शिक्षा विभाग के बीच की अहम कड़ी के रूप में काम करने वाले डीईओ के बीकानेर सहित राज्य के विभिन्न जिलों में 250 से अधिक पद रिक्त हैं। स्वीकृत 558 डीईओ के पदों में से 45 प्रतिशत से अधिक पद रिक्त पड़े होने के कारण बोर्ड परीक्षाओं में मॉनिटरिंग को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। मॉनिटरिंग के अलावा जिले में शिक्षा का स्तर सुधारने और जिले की शिक्षण प्रणाली के विकास में डीईओ की भूमिका मुख्य है। मगर बड़ी संख्या में जिला शिक्षा अधिकारियों के पद रिक्त होने के कारण शिक्षण व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव देखने को मिल रहा है।

शिक्षा निदेशालय की ओर से दो वर्ष की बकाया डीईओ डीपीसी के प्रस्ताव पिछले महीने आरपीएससी को भिजवाए थे। लेकिन वर्ष 2023-24 और 2024-25 की डीपीसी की तिथि फिलहाल निर्धारित नहीं हुई है। जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद है, जो जिले में शिक्षा की गुणवत्ता और सभी सिस्टम की देखरेख करता है, यह पद राज्य सरकार के अधीन आता है। डीईओ ही जिला स्तर पर शिक्षा नीतियों के कार्यान्वयन, निगरानी, और मैनेजमेंट के लिए जिम्मेदार होता है। बीकानेर जिले में डीईओ प्रारंभिक और माध्यमिक दोनों पद लम्बे समय से रिक्त चल रहे हैं। चयन वर्ष 2022-23 की डीपीसी के बाद रामगोपाल म